ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-९९
दिनांक-मंगलवार,१७ दिसम्बर,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २३.१ एवं १०.३ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९० प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६५ प्रतिशत, हवा की औसत गति ४.५ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण २.० मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ३.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १५.० एवं दोपहर में २२.५ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में हल्का कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१८-२२ दिसम्बर,२०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १८-२२ दिसम्बर,२०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान २० से २१ डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान में गिरावट के साथ यह ९ से १० डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। रात्री एवं सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- चना की फसल में चना की सुंडी की निगरानी करें। इस कीट से फसल को काफी हानी होती है। शुरु में यह सुंडी चने की पत्तियों एवं कोमल टहनीयों को क्षती पहुँचाती है। फलिया आ जाने पर सुंडी फलों में छेद कर घुस जाती है तथा अन्दर ही अन्दर दाने को खाती रहती है। फलियाँ खोखला हो जाने पर दुसरे स्वस्थ फलियों को खाती है। खेत में इसे चने के फलियों में आधी अन्दर तथा आधी बाहर की ओर लटका देखा जा सकता है। अत्यधिक प्रक्रोप की स्थिती में प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.५ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से ६०० से ८०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।
- आलू की फसल में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। रोग का प्रकोप फसल में दिखने पर इसके बचाव हेतु २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- गेहुँ की २१-२५ दिनों की फसल में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्रम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई करें। सब्जियों की फसल जैसे मटर, टमाटर, बैगन, मिर्च में फल छेदक कीट का प्रक्रोप दिखने पर स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी या क्वीनलफॉस २५ ई०सी० दवा का १.५ मि०ली० प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई प्राथमिकता से करें। किसान भाई पिछात गेहूँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी में उर्वरक की मात्रा समयकालीन गेहूँ की अपेक्षा घटाकर ४० किलोग्राम नेत्रजन, ४० किलोग्राम फॉसफोरस एवं २० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर डालें तथा बीज की मात्रा को बढ़ाकर छिटकबाँ विधि से प्रति हेक्टेयर १५० किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए १२५ किलोग्राम बीज का व्यवहार करें। इस क्षेत्र के लिए *पी०बी०डब्लू० ३७३, एच०डी० २२८५, एच०डी० २६४३, एच०यू०डब्लू० २३४, डब्लू०आर० ५४४, डी०बी०डब्लू० १४, एन०डब्लू० २०३६, एच०डी० २६६७ तथा एच०डब्लू० २०४५* किस्में अनुशसित हैं। प्रति किलोग्राम बीज को २.५ ग्राम बेबीस्टीन की दर से पहले उपचारित करें। पुनः बीज को क्लोरपायरिफॉस २० ई०सी० दवा का ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बुआई के पूर्व खेत की जुताई में जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देती हो वैसे क्षेत्रों के किसान खेत की अन्तिम जुताई में जिंक सल्फेट २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। गेहूँ की जिन खेतों में दीमक का प्रकोप रहता हो, वैसे किसान दीमक से बचाव के लिए क्लोरपायरिफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ लीटर मात्रा बालू में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से अन्तिम जुताई के समय खेत में डालें।
- अगात बोयी गई रबी मक्का की ५०-५५ दिनों की फसल में ५० किलोग्राम नत्रजन का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। फसल में नियमित रुप से कीट एवं रोग-व्याधी की निगरानी करें।
- प्याज के ५०-५५ दिनों के तैयार पौध की रोपाई करे। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे। खेत की तैयारी में १५ से २० टन गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम फॉसफोरस, ८० किलोग्राम पोटास तथा ४० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें।
- दूधारु पशुओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें। इनमें दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः २१.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.३ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः १०.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.६ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी